AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)
Vol (3), Issue (2), April-June 2026 ISSN: 3048-7951

छात्राओं द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय वर्ग चयन: एक अध्ययन

डॉ० प्रवीण कुमार[1] & रचना त्रिपाठी[2]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.21650928
Review: 05/06/2026 Acceptance: 08/07/2026 Publication: 28/07/2026

सारांश: प्रस्तुत अध्ययन छात्राओं द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय वर्ग चयन को निर्धारित करने वाले कारकों का विश्लेषण करता है। इसमें कला, विज्ञान और वाणिज्य वर्गों के चयन को व्यक्तिगत रुचि, शैक्षिक योग्यता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्थिति, अभिभावकों के प्रभाव, साथियों के दबाव तथा विद्यालयीय सुविधाओं के आधार पर परखा गया है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि जहाँ कुछ छात्राएँ अपनी रुचि एवं भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखकर विषय वर्ग का चयन करती हैं, वहीं अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यालय में उपलब्ध विषयों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया है। साथ ही, उचित करियर मार्गदर्शन, जागरूकता एवं सही जानकारी के अभाव जैसी कमियाँ भी सामने आई हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि कई मामलों में छात्राओं का चयन उनकी वास्तविक अभिरुचि एवं क्षमता से पूर्णतः मेल नहीं खाता। अतः विषय वर्ग चयन प्रक्रिया को अधिक छात्रा-केंद्रित, जागरूकता-आधारित एवं मार्गदर्शन युक्त बनाने की आवश्यकता है, जिससे बेहतर शैक्षिक निर्णय और भविष्य के अवसर सुनिश्चित किए जा सकें।

बीज शब्द: छात्रा, उच्च माध्यमिक स्तर, विषय वर्ग, चयन।

प्रस्तावना:

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का आधार मानी जाती है। यह न केवल व्यक्ति को ज्ञान एवं कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसमें विवेक, निर्णय-क्षमता, सामाजिक चेतना तथा आत्मनिर्भरता का विकास भी करती है। किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति का स्तर वहाँ की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता एवं समानता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा होता है। विशेष रूप से विकासशील देशों में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन एवं सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी माध्यम माना गया है (UNESCO, 2018)।

भारतीय संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता तक सीमित न होकर व्यक्ति के समग्र विकास, सामाजिक न्याय तथा समान अवसरों की स्थापना से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता के बाद से भारत में शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक नीतियाँ एवं कार्यक्रम लागू किए गए हैं, जिनका उद्देश्य समाज के वंचित वर्गों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों एवं बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना रहा है । इसके बावजूद आज भी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों, तथा बालक-बालिकाओं के बीच शैक्षिक अवसरों में असमानता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है (NCERT, 2020)।

उच्च माध्यमिक शिक्षा का महत्व:

उच्च माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 11-12) शिक्षा प्रणाली का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है, जो माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक जीवन के बीच सेतु का कार्य करता है। इस स्तर पर छात्र-छात्राएँ न

[1]सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, के. एफ. आई., राजघाट फोर्ट, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, इंडिया
[2]पूर्व एम. एड. छात्रा, शिक्षा विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, के. एफ. आई., राजघाट फोर्ट, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, इंडिया

केवल विषयों का गहन अध्ययन करते हैं, बल्कि अपने भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक जीवन की दिशा भी निर्धारित करते हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के लिए यह स्तर सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न वर्गों—जैसे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य—में अध्ययन का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनकी रुचि, योग्यता एवं क्षमता के अनुसार विषय चयन संभव हो पाता है । यह चरण निर्णय-निर्माण, आलोचनात्मक चिंतन तथा समस्या-समाधान जैसी उच्च स्तरीय मानसिक क्षमताओं के विकास में सहायक होता है (Kothari Commission, 1966)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, उच्च माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में बहुविषयक ज्ञान, व्यावहारिक कौशल तथा जीवनोपयोगी क्षमताओं का विकास करना है, ताकि वे बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल सकें (NEP, 2020) । यह स्तर व्यावसायिक उन्मुख शिक्षा की आधारशिला रखता है और विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा रोजगार के लिए तैयार करता है ।

बालिका शिक्षा का महत्व:

बालिका शिक्षा किसी भी समाज की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक बदलाव और राष्ट्रनिर्माण में भी इसकी केंद्रीय भूमिका है । बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने से न केवल उनके ज्ञान और कौशल का विकास होता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास, निर्णय-क्षमता और सामाजिक भागीदारी में भी वृद्धि होती है (UNICEF, 2020)।

अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षा प्राप्त करने वाली बालिकाएँ अपनी स्वास्थ्य संबंधी समझ में सुधार लाती हैं, परिवार नियोजन और पोषण जैसी महत्वपूर्ण जानकारियों को अपनाती हैं और अपने परिवार एवं समुदाय में सकारात्मक योगदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा बालिकाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने और करियर विकल्पों की स्वतंत्रता प्रदान करती है (Tilak, 2018)।

भारत में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अनेक सरकारी योजनाएँ चलाई गई हैं, जैसे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV) और छात्रवृत्ति कार्यक्रम। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बालिकाओं की शिक्षा को सशक्त बनाने और ग्रामीण व कमजोर वर्गों में उनके विद्यालय में नामांकन एवं निरंतरता बढ़ाने पर विशेष बल दिया गया है (NEP, 2020)।

ग्रामीण संदर्भ में बालिका शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह समाज में लैंगिक समानता स्थापित करने, बालिकाओं को पारिवारिक एवं सामाजिक निर्णयों में भागीदार बनाने और उन्हें उच्च माध्यमिक व उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर करने का अवसर प्रदान करती है। अतः बालिका शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक प्रगति और राष्ट्रनिर्माण के लिए भी आवश्यक है।

विषय वर्ग चयन की अवधारणा

विषय वर्ग चयन से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके अंतर्गत विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11-12) में उपलब्ध विभिन्न शैक्षिक वर्गों—जैसे कला , विज्ञान एवं वाणिज्य —में से अपनी रुचि, योग्यता, क्षमता एवं भविष्य की आकांक्षाओं के अनुरूप किसी एक वर्ग का चुनाव करता है। यह चयन विद्यार्थी के शैक्षिक, व्यावसायिक तथा सामाजिक जीवन को दीर्घकाल तक प्रभावित करता है। शिक्षाविदों के अनुसार, विषय वर्ग चयन केवल विषयों का चयन मात्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, व्यावसायिक निर्माण तथा सामाजिक गतिशीलता से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण निर्णय है (Super, 1957)। शाखा चयन इस आधार पर किया जाता है कि चयन आगे चलकर उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा रोजगार के अवसरों की दिशा निर्धारित है सके।

उच्च माध्यमिक शिक्षा में शाखा चयन की अवधारणा इस मान्यता पर आधारित है कि प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि, अभिक्षमता एवं बौद्धिक क्षमता भिन्न होती है । इसलिए सभी विद्यार्थियों के लिए एक समान शैक्षिक मार्ग उपयुक्त नहीं हो सकता। इसी कारण शिक्षा आयोग ने यह सुझाव दिया कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को उनकी योग्यता एवं रुचि के अनुसार विभिन्न शाखाओं में अध्ययन का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए (Kothari Commission, 1966)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शाखा चयन को अधिक लचीला एवं बहुविषयक बनाने पर बल दिया गया है, ताकि विद्यार्थी विषयों का चयन स्वतंत्रता से कर सकें और किसी एक विषय वर्ग तक सीमित न रहें (NEP, 2020) । इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्णय क्षमता, आत्मविश्वास तथा करियर के प्रति स्पष्टता विकसित होती है।

विषय वर्ग चयन को निर्धारित करने वाले कारक

1. **व्यक्तिगत कारक:** उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय वर्ग चयन में व्यक्तिगत कारकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। इन कारकों में छात्रा की रुचि, योग्यता, आत्म-विश्वास, शैक्षणिक उपलब्धि तथा भविष्य संबंधी आकांक्षाएँ सम्मिलित हैं। यदि किसी छात्रा की रुचि विज्ञान विषयों में है और उसकी गणित अथवा विज्ञान में शैक्षणिक उपलब्धि अच्छी है, तो वह प्रायः विज्ञान शाखा का चयन करती है। इसी प्रकार भाषा, समाजशास्त्र या इतिहास जैसे विषयों में रुचि रखने वाली छात्राएँ कला शाखा की ओर आकर्षित होती हैं। Sahni एवं Kothari (2023) के अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से सामने आया है कि विषय में रुचि, आत्म-प्रेरणा तथा शैक्षणिक आकांक्षा विषय वर्ग चयन के प्रमुख व्यक्तिगत निर्धारक हैं। आत्म-धारणा भी निर्णय को प्रभावित करती है, क्योंकि छात्रा उसी क्षेत्र को चुनने का प्रयास करती है जिसमें वह स्वयं को सफल मानती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कई बार सीमित शैक्षिक संसाधनों के कारण छात्राओं की व्यक्तिगत रुचि पूरी तरह व्यक्त नहीं हो पाती, फिर भी उपलब्ध विकल्पों के भीतर वे अपनी योग्यता के अनुसार विषय वर्ग का चयन करने का प्रयास करती हैं। इस प्रकार, व्यक्तिगत कारक विषय वर्ग चयन की आधारशिला माने जा सकते हैं (Sahni & Kothari, 2023)।

2. **पारिवारिक कारक**: पारिवारिक कारक छात्राओं के विषय वर्ग चयन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि, पेशा, सोच तथा अपेक्षाएँ छात्रा के निर्णय को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। निम्न या मध्यम आय वर्ग के परिवार प्रायः ऐसे विषय वर्ग को प्राथमिकता देते हैं जिसमें कम खर्च और शीघ्र रोजगार की संभावना हो। Mohamad Khir (2023) के अध्ययन में यह पाया गया कि अभिभावकों का समर्थन, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा साथियों का प्रभाव विशेष रूप से विज्ञान एवं तकनीकी शाखाओं के चयन में महत्वपूर्ण होता है। कई बार छात्राओं की व्यक्तिगत रुचि के स्थान पर माता-पिता की इच्छा अधिक प्रभावी हो जाती है, विशेषकर ग्रामीण समाज में। ग्रामीण क्षेत्रों में यह भी देखा गया है कि माता-पिता बेटियों के लिए सुरक्षित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य विषय वर्ग का चयन करना पसंद करते हैं। इस कारण छात्राएँ अपनी वास्तविक रुचि के विपरीत विषय वर्ग चुनने के लिए बाध्य हो जाती हैं। इस प्रकार, पारिवारिक कारक विषय वर्ग चयन की दिशा तय करने में अत्यंत प्रभावशाली माने जाते हैं (Mohamad Khir ,2023)।

3. **सामाजिक कारक**: सामाजिक कारक भी विषय वर्ग चयन को गहराई से प्रभावित करते हैं । समाज में प्रचलित मान्यताएँ, परंपराएँ, लैंगिक रूढ़ियाँ तथा विषय वर्ग से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा छात्राओं के निर्णय को प्रभावित करती हैं। सामान्यतः विज्ञान और वाणिज्य को अधिक प्रतिष्ठित एवं रोजगारोन्मुखी माना जाता है, जबकि कला विषय वर्ग को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया जाता है। Sivananthan (2024) के अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि सामाजिक अपेक्षाएँ, रोजगार की धारणा तथा समाज का दृष्टिकोण छात्राओं के विषय वर्ग चयन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है । ग्रामीण समाज में लड़कियों के लिए विज्ञान विषयों को कठिन मानने की धारणा भी विषय वर्ग चयन को सीमित कर देती है । इसके अतिरिक्त, मित्र समूह का प्रभाव भी सामाजिक कारकों में शामिल है। यदि मित्र किसी विशेष विषय वर्ग का चयन करते हैं, तो छात्रा भी उसी दिशा में निर्णय लेने लगती है । इस प्रकार सामाजिक वातावरण छात्राओं की सोच को आकार देकर विषय वर्ग चयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है(Sivananthan, 2024)।

4. **शैक्षिक और संस्थागत कारक:** विद्यालय से संबंधित कारक जैसे विषय-शिक्षकों की उपलब्धता, प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, शैक्षिक वातावरण तथा करियर मार्गदर्शन सेवाएँ विषय वर्ग चयन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। यदि किसी विद्यालय में विज्ञान या वाणिज्य विषय वर्ग की सुविधा उपलब्ध नहीं होती, तो छात्राएँ विवश होकर कला विषय वर्ग का चयन करती हैं। IGNOU-E-GyanKosh के शैक्षिक मॉड्यूल के अनुसार, विद्यालय स्तर पर उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श की कमी के कारण छात्राएँ सूचित निर्णय नहीं ले पातीं। विशेष रूप से सरकारी एवं ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की कमी विषय वर्ग चयन को सीमित कर देती है। शिक्षकों का प्रोत्साहन और मार्गदर्शन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक छात्रा की योग्यता को पहचानकर सही दिशा में मार्गदर्शन देते हैं, तो छात्रा आत्म-विश्वास के साथ

विषय वर्ग का चयन कर पाती है। इस प्रकार, संस्थागत कारक विषय वर्ग चयन में एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं(NCERT/IGNOU)।

5. **ग्रामीण संदर्भ में विषय वर्ग चयन:** ग्रामीण भारत में उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्राओं द्वारा विषय वर्ग चयन एक जटिल प्रक्रिया है जो केवल व्यक्तिगत रुचि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और शैक्षिक बाधाओं का परिणाम होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा से जुड़ी आर्थिक बाधाएँ एक मुख्य निर्धारक हैं। ASER-2023 सर्वेक्षण के अनुसार ग्रामीण युवाओं का बहुमत अब भी कला और मानविकी जैसे सस्ते और सांस्कृतिक रूप से सुगम विकल्पों की ओर आकर्षित होता है, जबकि STEM (Science/Technology) विषयों को चुनने वाली छात्राओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है। इसके प्रमुख कारणों में आर्थिक प्रतिबंध, संसाधनों की कमी, अध्यापक एवं मार्गदर्शन की अनुपलब्धता शामिल हैं, जिससे विज्ञान या वाणिज्य विषयों का चयन कठिन हो जाता है(Smile Foundation, 2023)। ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति और असमर्थता भी विषय वर्ग चयन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। ग्रामीण परिवार उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए अक्सर सीमित संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, जिससे वे कम खर्चीली विषय वर्गों को प्राथमिकता देते हैं और योग्यता या रुचि की बजाए लागत-आधारित निर्णय करते हैं, जिससे विज्ञान और व्यावसायिक विषयों की मांग घटती है। (The Samikhsha, 2022).

इसके अलावा सामाजिक दृष्टिकोण और लैंगिक रूढ़ियाँ ग्रामीण समुदायों में अधिक जीवित हैं, जो लड़कियों को पारंपरिक और सुरक्षित विकल्पों की ओर मार्गदर्शित करती हैं। साथ ही, ग्रामीण विद्यालयों में कार्यक्षमता - सम्पन्न शिक्षक, प्रयोगशाला और व्यावसायिक मार्गदर्शन की उपलब्धता शहरी विद्यालयों की तुलना में कम होती है, जिससे छात्राओं का STEM विषयों को चुनने का आत्म-विश्वास कम होता है। इससे वे अक्सर समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप कला और मानविकी जैसे पारंपरिक क्षेत्रों की तरफ रुझान रखती हैं, बजाय उस विषय वर्ग के जो उनकी प्रतिभा से मेल खाती हो (Smile Foundation, 2023)।

निष्कर्ष:

विभिन्न अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शाखा चयन में छात्राओं को विभिन्न कारक प्रभावित करते है। इनमें शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में विषय चयन ज्यादा ही चुनौतीपूर्ण है। क्योंकि शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा आज भी बालिकाओं के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण है।

संदर्भ-सूची:

Kamble, S. S. (2018). A study of educational problems of girls at secondary level in rural areas. Journal of Educational Technology, 5(2), 45-52.

Agrawal, P. (2020). Rural girls' education: An analytical study of socio-economic and cultural barriers. The Eurasia Proceedings of Educational and Social Sciences, 8(1), 23-30.

Das, R. (2019). A study of girls' education at secondary level in Arunachal Pradesh. Indian Journal of Research, 7(3), 112-118.

Verma, R. (2021). Socio-economic determinants of subject choice among rural girls at higher secondary level. Journal of Research and Analytical Reviews, 10(2), 67-74.

Singh, P., & Sharma, R. (2021). Determinants of subject choice among higher secondary students. , Indian journal of educational development, 9(1), 55-62.

Singh, K. (2018). Educational barriers and dropout among rural girls at secondary level. Indian Journal of Research, 6(4), 88-95.

Chatterjee, S. (2019). Girls' education and empowerment in rural areas. Journal of Rural Development, 12(2), 101-110.

Gariya, R. (2017). A comparative study of attitudes toward education among urban and rural populations. The Eurasia Proceedings of Educational and Social Sciences, 5(1), 33-40.

Premachandran, P. (2025). Girls' education in rural India: Barriers and policy interventions. Journal of Research and Analytical Reviews, 14(1), 75-84.

Yadav, S. (2024). Understanding dropout crisis in girls' education in India. Indian Journal of Research, 11(2), 50-59.

Biswas, P., & Kundu, A. (2022). Status of girls' education and gender disparity in rural India. Journal of Educational Technology, 13(3), 120-128

Dutta, S. (2019). Women empowerment awareness among adolescent girls .Indian journal of educational development, 8(2), 66-72.

Anjum, S. (2023). Educational status of Indian women: A historical study. Journal of Research and Analytical Reviews, 15(1), 90-98.

Kaur, R., & Kaur, K. (2018). Factors affecting educational aspirations of rural adolescent girls. The Eurasia Proceedings of Educational and Social Sciences, 7(2), 41-49.

Shyam Babu, A. (2019). Girl child dropout: A comparative study of rural and tribal areas.Indian Journal of Research, 9(3), 77-85.

Patel, S. K. (2019). Women education in rural India. Journal of Educational Technology, 10(2), 58-64.

Sahni, K., & Kothari, R. (2023). Factors influencing subject choice among high school students. Journal of Research and Analytical Reviews, 12(1), 34-42.

Chaurasiya, S., & Gupta, K. (2025). Social perspective of education in rural and urban areas. Indian journal of educational development, 14(2), 99-107.

Panda, A. (2008). Primary school dropout with special reference to girl children. Indian Journal of Research, 3(1), 21-29.

Gudadur, S. S. (2021). Mental health awareness and educational problems of adolescent girls. Journal of Educational Technology, 11(2), 60-68.

UNESCO. (2018). Global Education Monitoring Report 2018: Accountability in Education. Paris: UNESCO Publishing.

NCERT. (2020). National Curriculum Framework for School Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

Kothari Commission. (1966). Education and National Development: Report of the Education Commission (1964-66). New Delhi: Ministry of Education, Government of India.

Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Ministry of Education. www.education.gov.in/en/annual-report

UNICEF. (2020). Education and COVID-19: Challenges and Opportunities. New York: United Nations Children's Fund.

IGNOU. (n.d.). e-Gyankosh: A National Digital Repository. New Delhi: Indira Gandhi National Open University.

Smile Foundation. (2023). State of Education in India Report 2023. New Delhi: Smile Foundation. www.smilefoundationindia.org/education

Census of India. (2011). Primary Census Abstract Data Tables. New Delhi: Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.

UDISE+. (2020). Unified District Information System for Education Plus Report 2019-20. New Delhi: Ministry of Education.

Ministry of Education. (2020). Annual Report 2019-20. New Delhi: Government of India.

ASER Centre. (2023). Annual Status of Education Report (Rural) 2023. New Delhi: ASER Centre. www.asercentre.org/aser-2023

Samiksha. (2020). School Education Quality Index Report. New Delhi: Ministry of Education/ NITI Aayog.